International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

कृष्णा सोबती के उपन्यास 'जिंदगीनामा' का अध्ययन

डॉ. राम कुमार

ASSISTANT PROFESSOR
DEPT. OF HINDI
F.G.M. GOVT.COLLEGE ADAMPUR (HISAR)

सार

कृष्णा सोबती जी का जन्म १८ फरवरी , १९२५ को हुआ था | उन्होंने पचास के दशक से ही लिखना प्रारंभ कर दिया था | लेखन में उनकी पहली कहानी 'लामा' थी , जो सन १९५० में प्रकाशित हुई थी | सोबती जी को उनके लेखन क्षेत्र में अद्वितीय कार्य करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया | वे साहित्य अकादमी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार इत्यादि से सम्मानित की जा चुकी हैं | 'जिंदगीनामा' कृष्णा सोबती जी के द्वारा लिखित बहुत ही प्रसिद्ध उपन्यास है |

मुख्य शब्द:

उपन्यास, विभाजन , ग्रामीण, गांव

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

भूमिका

'जिंदगीनामा' उपन्यास की विशेष बात यह है कि इस उपन्यास में न ही किसी नायक का चित्रण किया गया है और न ही किसी खलनायक का | अपितु इस उपन्यास में सिर्फ ओर सिर्फ आम लोगों और उनकी समस्याओं को उजागर किया गया है |

जिन्दगी रुख 'जिंदगीनामा' उपन्यास का प्रथम भाग है | इस प्रथम भाग में विशेष तौर पर ग्रामीण लोगों और उनकी समस्याओं को उजागर करने का प्रयास श्रीमती सोबती जी के द्वारा किया गया है | इस भाग में सन १९०५ से १९१५ के घटनाक्रम को उजागर किया गया है | उस समय भारत में विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों का प्रभाव ज़ोरों पर था |

'जिंदगीनामा' में विभाजन से पूर्व पंजाब प्रांत के ग्रामीण लोगों की धारणाओं के साथ-साथ उन लोगों द्वारा ब्रिटिश सरकार के खिलाफ चलाए गये आन्दोलन का भी विवरण मिलता है | 'सोबती ' जी भी विभाजन के बाद पाकिस्तान से अपनी जन्म भूमि त्याग कर भारत में आई थी | इस उपन्यास के द्वारा उन्होंने अपनी जन्म भूमि को छोड़ने के दुःख का वर्णन किया है और बताया है कि कैसे ब्रिटिश सरकार की कठोर नीतियों के

कारण हिन्दुस्तान के लाखों लोगों को अपने जन्म स्थान को छोड़ कर , दुसरे स्थान पर रहना पड़ा | वह अपने उपन्यास 'जिंदगीनामा' में उल्लेख करती हैं कि कैसे विभाजन से पूर्व उनके गांव में सभी धर्मों के लोग मिल-जुल कर रहते थे | उनके गांव में सभी लोग एक-दुसरे के धर्म और रीति – रीवाजो का सम्मान करते थे |

गांव में किसी एक व्यक्ति की समस्या को सुलझाने के लिए गांव के सभी लोग तत्पर रहते थे | सभी लोग एक-दुसरे के त्योहारों एवं सुख-दुःख की घडी में एक- साथ रहते थे | लेखिका इस उपन्यास में बताती है कि इनके गांव के बाहर से 'चनाब' नदी बहती थी तथा वह रोज़ शाम को इस नदी के तट पर जाया करती थी और वहां की मिट्टी में घंटो तक अपने दोस्तों के साथ खेला करती थी |

सोबती जी के द्वारा 'जिंदगीनामा' उपन्यास में कई चरित्रों का वर्णन किया गया है | इनमें कई चरित्र जैसे शाहजी, शाहनी , हीरा , गुरुदत्त आदि उल्लेखनीय हैं | वो लिखती हैं कि शाहनी शाहजी की दूसरी पत्नी थी | शाहजी की पहली बीवी का विवाह के कुछ वर्षों बाद ही देहांत हो जाता है | शाहजी की कोई औलाद न होने के कारण उन्हें अपना दूसरा विवाह शाहनी से करना पड़ता है | परन्तु जब विवाह के कुछ वर्षों बाद , जब शाहनी की भी गोद नही भरती तब शाहजी के घरवाले उन्हें संतान प्राप्ति के लिए तीसरे

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

विवाह करने की सलाह देते हैं | परन्तु शाहजी उनकी इस सलाह को मानने के लिए राज़ी नही होते | वही एक रात सपने में शाहनी को कृष्ण जी जैसा एक छोटा बालक नज़र आता है | यह देखकर उसकी आँख झट से खुल जाती है और वह महसूस करती है कि वो माँ बनने वाली है | सोबती जी आगे बताती है कि शाहनी की माँ बनने की खबर से पूरे गांव में ख़ुशी की लहर दौड़ जाति है और पूरा गाँव उनकी इस ख़ुशी में समिल्लित हो जाता है | सोबती जी ने अपने उपन्यास में ऐसे कई घटनाओं का वर्णन किया है जिससे पता चलता है कि विभाजन से पूर्व उनके गांव में कितनी सुख-शान्ति थी तथा लोग कितने प्यार से रहते थे |

'जिंदगीनामा' में पंजाब प्रान्त की संस्कृति को उजागर किया गया है जो कि मूलत: आर्य संस्कृति के नाम से जानी जाती है | ऐसा भी खा जा सकता है कि इस उपन्यास के मुख्य नायक या नायिका 'ज़िन्दगी' ही है क्योंकि इस उपन्यास में विशेष तौर पर आम लोगों की ज़िन्दगी के सौन्दर्य के ही दर्शन होते हैं | ऐसे बहुत ही कम लेखक या लेखिका होते हैं जो जीवन से जुड़ी हुई छोटी से छोटी बात को बड़े ही सहज तरीके से कहने में सक्षम होते हैं , कृष्णा सोबती जी इन्ही लेखको की मुख्यधारा में आती हैं |

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

उन्होंने अपने उपन्यास में पंजाब के एक छोटे से गांव 'गुजरावालां' का उल्लेख लिया है जहां उनका बचपन बीता | वह बताती हैं कि 'गुजरावालां' के किसान बहुत ही मेहनती हैं | वे दिन-रात कठिन परिश्रम करते हैं ताकि उनके घर का किसी तरह गुजर बसर हो सकें | वह आगे बताती हैं कि गांव के लोग बहुत ही धार्मिक प्रवृति वाले हैं तथा कुछ लोग अंध-विश्वासी भी थे | गांव में कई लोग छोटे से छोटे कार्य के लिए बाबाओ के पास जाते थे और उनकी स्वीकृति के बिना कोई नही नया कार्य शुरू नही करते थे |

उपन्यास 'जिंदगीनामा' का अध्ययन

सोबती जी ने अपने उपन्यास 'जिंदगीनामा' में यह भी उल्लेख किया है कि कैसे अंग्रेजी सरकार विभिन्न नीतियां लाकर गांव के भोले – भाले लोगों को अपने शिन्कंजे में जकड़ रहे थे | वे बताती है कि ब्रिटिश सरकार , गांव के लोगों की जमीनें दोखे से हड़प रही थी | ग्रामीणों द्वारा इसका विरोध करने पर उनकी आवाज को बलपूर्वक कुचला जा रहा था| सोबती जी उल्लेख करती हैं कि लोगों की इसी एकता को तोड़ने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 'फूट डालो , राज करो' की नीति का अनुसरण किया तथा भारत के लोगों में फूट डालने के लिए हिन्दू-मुसलमान का षड्यंत्र रचा और वे इस षड्यंत्र में कामयाब भी हुए

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

क्यूंकि विभिन्न स्थानों पर साम्प्रदायिक दंगे भी हुए , जिनमें कई हिन्दू और मुसलमान लोग मारे गये |

सोबती जी उल्लेख करती हैं कि अंग्रजो की इस नीति के कारण ही हिन्दुस्तान का विभाजन हुआ तथा भारत और पाकिस्तान दो मुल्क बन गये | इसी विभाजन के कारण ही लाखो लोगों को अपना जन्म स्थान छोड़कर जाना पड़ा था | इस विभाजन की आग सोबती जी पर भी पड़ी थी , जो विभाजन से पूर्व 'गुजरावालां' गांव में रहती थी , जो अब पाकिस्तान का हिस्सा बन चूका था | इस कारण सोबती जी को अपना गांव छोड़कर भारत के गुजरात प्रांत में आना पड़ा| अपने इसी जन्म स्थान को छोड़ने का दुःख उन्होंने अपने उपन्यास 'जिंदगीनामा' के ज़रिये वर्णित किया है |

अपने उपन्यास 'जिंदगीनामा' में सोबती जी ने विभाजन से पूर्व की कुछ रोचक प्रसंगों का उल्लेख किया है | उसमें से एक प्रसंग इस प्रकार है "

"मियाँ मीर शाह अक्सर अमल और शुगल में रहा करते। हिन्दु मुसलमान सब उनके दरबार में आते। "किसी अहमक ने बादशाह सलामत के आगे शिकायत कर दी कि मियाँ साहिब के यहाँ ओबाश लोगों का हजूम रहता है। इसकी खोज-बीन की जाए।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

"सो बादशाह सलामत ने फ़ रमाया कि जब तक हम खुद मौके को न देखें, सुनी-सुनाई पर कुछ न करना चाहेगें।

"चुनाँवे दक दिन बादशाह घोड़े पर सवार हुए और उधर का रूख कर लिया। रास्ते में दरिया रावी हाईल था। चूँकि पानी कम था, बादशाह सलामत ने घोड़ा पानी में डाल दिया।

"जब घोड़ा ऐन दरिया के बीच पहुँचा तो घोड़े ने पेशाब और लीद कर दी। शाह मियाँ मीर दरबार में बैठे-बैठे अपनी रूहानी आँख से सब देख रहे थे।

"बादशाह दरबार में पहुँचे तो शाह साहिब ने हँसकर फरमाया-'आपके घोड़े ने तमाम दरिया गन्दा कर दिया है। अब हम वुजू और गुसल कहाँ करेंगे!'

"शाहजहाँ बादशाह हँसे। कहा-'साँई साहिब भला घोड़ो की लीद से दरिया होते होंगें!'

" 'फकीर का दिल, जो बामस्त समुद्र है अगर दुनिया की अलाइश से पलीत हो सकता है तो यह क्यों नहीं हो सकता!'

"सुनते ही बादशाह पर असर हुआ और शाहजहाँ ने साँई साहिब की शागिर्दी कबूल कर ली।

"इतने में बादशाह सलामत देखते क्या हैं, छज्जू भगत दरबार में आ खड़े हुए। देखते ही मियाँ मीर छज्जू भगत की पेशवाई के लिए उठे और बाइज्जत अपनी गद्दी पर बिठाया।

"बादशाह ने देखा मगर दरियाए- तकब्बुर में गर्क रहे और खुद के बन्दे को न पहचाना। इधर शाही सवारी मियाँ मीर शाह के दरबार से रूखसत हुई, उधर बादशाही प्यादा दौड़ा-दौड़ा आन पहुँचा। अजऱ् की-'साँई साहिब,बादशाह सलामत की हवा बन्द हो गई है। पेट फू ल गया है। और वह बड़े अवाजार हैं।'

"साँई साहिब ने फरमाया- मैं इस मामले में कुछ नहीं कर सकता ! उनकी यह तकलीफ सिर्फ छज्जू भगत ही रफा कर सकते हैं।'

" प्यादा भगतजी के आगे पहुँचा तो यह बोले- मैं एक मामूली टटपूँजिया। दवा और दारू क्या जानूँ !'

" छज्जू भगत बोले- यह साँई साहिब की बन्दानवाजी है। वह हर तरह साहेब-कमाल है।'

" हारकर प्यादा फिर साँई साहिब के दरबार में हाजर हुआ- शाह साहिब, बादशाह सलामत बड़ी तंगी में है। कुछ तो करिए ! '

" साँई साहिब ने फरमाया- बादशाह सलामत से जाकर कहो कि भगतजी के यहाँ उन्हें प्यादा न भेजना था। उन्हें खुद जाना चाहिए था!"

"हारकर बादशाह सलामत छज्जू भगत के यहाँ पहुँचे। कहा- भगतजी, मेरी खता बक्श दी जाए। बड़ी मुश्किल में हूँ। '

" छज्जू भगत बोले- ऐ बादशाह, तुम्हें अपनी शहंशाही पर इतना गुमान! बताओ, हम जैसे मामूली लोग किसी एक बादशाह के लिए कर भी क्या सकते है ! '

"भगतजी, रहम कीजिए। मेरी परेशानी अब बरदाश्त के बाहर है। '

" ऐ शहंशाह, यह तो बताओ, अगर हमारी दया से राजी हेा गए तो इसके एवज में क्या दोगे ?'

" आप जो कहें महाराज, आप फरमाइए। '

निष्कर्ष

संस्कृति से गहरे जुड़े होने की पृष्ठभूमि में लेखिकाओं की प्रतिबद्धता है, जिसे सांस्कृतिक प्रतिबद्धता का नाम दिया जा सकता है। यह प्रतिबद्धता दुहरी है - एक अपने प्रति, अपने लेखन के प्रति तथा दूसरी उसमें संजोए परिवेश और उस संस्कृति के प्रति जिसमें लेखक सांस लेता है। अध्ययन दौरान दोनों लेखिकाओं की प्रतिबद्धता संस्कृति के प्रति, दायित्व रूप में सामने आई है। इस संबंध में कृष्णा सोबती मानती हैं कि यदि लेखक संघर्ष से जूझता है, परिस्थितियों से टक्कर लेता है, तो इसका अहसान किसी दूसरे पर नहीं, सिर्फ़

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

उसकी कलम पर है, कोई भी अच्छी कलम मूल्यों के लिए लिखती है, मूल्यों के दावेदारों के लिए नहीं। अगर लेखक इन सब मूल्यों से गैरहाज़िर है तो वह केवल मात्र शामियानों और विज्ञान-भवनों की शोभा बनकर रह जाएगा। वह व्यक्तिगत सीमाओं को पार करते हुए समष्टि से जुड़ने का दायित्व और संकल्प रखती हैं। इस लिए सोबती जी समाज से जुड़ना ज़रूरी समझती हैं और मानती है ं कि लेखक का सीना यदि गर्म न हो और आँखें ठण्डी न हों तो लगातार 328 सोहबत से भी रचनाकार के हाथ कुछ न लगेगा। इसलिए लेखक के पास विश्लेषणात्मक आत्मीयता, बेखौफ़ी और तराश भी होनी चाहिए।

सन्दर्भ

1. कृष्णा सोबती, 'ज़िन्दगीनामा', पृ. 16.
2. कृष्णा सोबती से बातचीत (अप्रकाशित साक्षात्कार), पृ. 11.
3. कृष्णा सोबती, 'ज़िन्दगीनामा', पृ. 233.
4. वद्यामार्तण्ड प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तलंकार, 'भारत की जन-जातियाँ तथा संस्थाएं', पृ. 263-64
5. मनमोहन सहगल, 'गुरु ग्रन्थ साहिब : एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण', पृ. 559-560.

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

6. मनुस्मृति 3/20, 21 श्लोक (याज्ञवल्क्य स्मृति विवाह प्रकरण वर्णनम)

7. कृष्णा सोबती, 'ज़िन्दगीनामा', पृ.३१०